वेदप्रकाश अमिताभ की लघु कथाएँ : समय–समाज से गहरी सम्पृक्ति

डॉ० देवेन्द्र कुमार
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
चौ० जी०एस० गर्ल्स डिग्री कॉलिज, बान्दूखेड़ी (सहारनपुर)

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:
डॉ० देवेन्द्र कुमार

वेदप्रकाश अमिताभ की लघु कथाएँ : समय–समाज से गहरी सम्पृक्ति

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 119–122

Article No. 18
http://anubooks.com
?page_id=581

सारांश

वेदप्रकाश अमिताभ की लघुकथाएँ समाज में व्याप्त विसंगतियों पर तीव्र प्रहार करती है तथा समाज के उत्थान के लिए व्यक्तियों को प्रेरित करती है। समाज में व्याप्त साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी, राजनीतिक–पतन, आपसी वैमनस्य आदि विसंगतिया समाज के लिए अभिशाप बन गयी है। वेदप्रकाश अभिताभ ने इन समस्याओं को रेखांकित कर अपनी लघु कथाओं के माध्यम से, आमआदमी की आवाज को बुलन्द करने का सराहनीय प्रयास किया है।

मूल शब्द

बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, वैमनस्यता, बिडम्वना, दुष्परिणाम आदि

वेदप्रकाश अमिताभ की लघु कथाएँ : समय–समाज से गहरी सम्पृक्ति

डॉ० देवेन्द्र कुमार

वेदप्रकाश अमिताभ ने दो दर्जन से अधिक लघु कथाओं का प्रणयन किया है। इनकी लघु कथाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में बिखरी हुई है। संख्या में कम होते हुए भी उनकी लघु कथाएँ कहानियों की तरह ही अपने समय और समाज से सम्पृक्त है और मार्मिक होने के कारण उनका प्रभाव सघन और तीक्ष्ण है।

बलराम द्वारा सम्पादित 'हिन्दी लघु कथा कोश' में श्री अमिताभ की दस लघु कथाएँ संकलित हैं। इस कोश की भूमिका में 'श्री बलराम ने लघु कथा को मेगाच्छन आकाश में कोंधी हुई बिजली के समान माना है।'1 जिस तीव्र प्रभाव की उपस्थिति एक अच्छी लघु कथा में बलराम ने मानी है, वह प्रभाव श्री अमिताभ की प्रायः सभी लघु कथाओं में देखने को मिलता है। 'दुर्घटना' लघु कथा में एक एक्सीडेण्ट की सूचना है जब अपने व्यक्ति को चोट गलती है तो दोष सड़क पर चलने वाले ट्रेफिक और जीप वाले को दे दिया जाता है और जब पता चलता है कि मौत किसी ओर की हुई है तो दोष मोटर साईकिल पर सवार पर मढ़ दिया जाता है और सारी सहानुभूति हवा हो जाती है। ''एक्सीडेण्ट नहीं होगा तो क्या होगा। ये आजकल के छोकरे स्कूटर पर बैठकर समझते हैं कि हवाई जहाज में बैठे हैं। साले सत्तर – अस्सी से कम तो दौड़ते ही नहीं है फिर मरेंगे नहीं तो क्या होगा। अब जीप वाला क्या कर लेगा आओ चलें, मरने दो सालों को।''[2]

इसी तरह स्थितियों के कन्ट्रास्ट के द्वारा बदलती, मनः स्थिति की विडम्बना 'बदलाव' रचना में भी है जब कौए सत्ता में थे तब कोयल विरोध में गला फाड़ रही थी। कोयल के सत्ता में आते ही कौए कॉव–कॉव करने लगते हैं मुसीबत है तो जनता की है–

''तमाम पक्षी असमंजस में है क्या सच है क्या झूठ? उनकी समझ में कुछ नहीं आता वे यह समझ रहे हैं कि बदलाव आ गया है लेकिन कैसा बदलाव? वे समझ नहीं पा रहे हैं कि कोयल अब कौओं की भाषा क्यों बोल रही है।''[3]

इस लघु कथा में दूरगामी व्यंजना है संकेत यह है कि पार्टियाँ बदल जाती हैं, सरकारें बदल जाती हैं लेकिन स्थिति जस की तस बनी रहती है इसलिए 'वोट' शीर्षक लघु कथा में बाबा टीकाराम सभी उम्मीदवारों के सामने मुहर लगा देता है–

''बाबा मुहर उठा लाए और ऊपर से नीचे सभी खानों में मुहर मारनी शुरू कर दी। जब तक मतदान कर्मी और पोलिंग एजेन्ट उन्हें रोके समझाएँ, तब तक बाबा सबको वोट दे चुके थे।''[4]

वोट से ही सम्बन्धित एक अन्य लघु कथा 'निर्देश' में दिखाया गया है कि किस तरह बिना पढ़े–लिखे लोग जन प्रतिनिधि चुने जा रहे हैं विशेषतः महिला जन प्रतिनिधियों पर उनके पति हावी रहते हैं और जनतांत्रिक प्रणाली को अंगूठा दिखाते रहते हैं– ''तुमने तो कहीं ही कि मेरे ते पूछे बगैर न तो कछु कहियो, और कछु न करियो– ''मिमियाती हुई गाँव पंचायत की भावी सदस्या रूँआस हो गयी थी।''[5]

वेदप्रकाश अमिताभ की कछु लघु कथाएँ समाज में नारी की नियति से सम्बन्धित हैं। ऐसी लघु कथाओं में 'गुलामी', 'ए बी सी डी और ई', 'उपाय' आदि उल्लेखनीय हैं।

ये लघु कथाएँ इंगित करती हैं कि स्वतन्त्र भारत में शिक्षा का प्रसार होने, नारी के आर्थिक स्वावलम्बन के बावजूद नारी की स्थिति बहुत बेहतर नहीं है। पुरूष प्रधान समाज में आज भी नारी द्वितीय श्रेणी की नागरिक है। 'गुलामी' लघु कथा का शीर्षक नारी की नियति का व्यंजक है। दादी से

परिवारी जन पूछते हैं कि वे अगले जन्म में भी दादा जी की पत्नी बनना चाहेगी या नहीं दादी का जबाव है–

''हुकुम बजाते – बजाते बूढ़ी हो गयी। सच पूछो तो मैं तो औरत का जन्म ही अब कभी ना चाहूँ। एक ही जन्म की गुलामी काफी नहीं है क्या?''[6]

'उपाय' लघु कथा में नारी के प्रति रूढ़िवादी मानसिकता को दर्शाते हुए उस पर व्यंग्य किया गया है। 'उपाय' में श्वसुर पुत्रवधू के देहान्त के तुरन्त बाद पुत्र के दूसरे विवाह की योजना बना लेता है। इसी तरह 'ए बी सी डी और ई' में ठाकुर साहब पुत्रवधू का चयन करते समय कुलीनता, चरित्र, दहेज का विचार तो करते हैं लेकिन उसका शिक्षित होना आवश्यक नहीं समझते। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि पुत्र के निधन के बाद उसे सम्मान जनक नौकरी नहीं मिल पाती है–

''मैं सोचने लगा कि ठाकुर साहब ने विवाह करते समय ए बी सी डी की बजाय 'ई' अर्थात् एजूकेशन या शिक्षा को भी ध्यान में रखा होता तो कितना अच्छा होता।''[7]

साम्प्रदायिकता के दुष्प्रभावों को लेकर कई अच्छी लघु कथाएँ लिखी हैं, जिसमें 'कर्फ्यू', 'जय श्रीराम जय श्रीकृष्ण', 'आरोप' आदि रचनाएँ उल्लेखनीय हैं इनमें दिखाया गया है कि किस तरह कुछ तत्व साम्प्रदायिक झगड़ों को बहकाने में रूचि लेते हैं जबकि धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर होने वाले झगड़े अत्यन्त निरर्थक होते हैं। 'आरोप' लघु कथा में दिखाया गया है कि किस तरह दूसरे सम्प्रदाय पर प्रहार को बहादुरी और मर्दानगी का प्रमाण माना गया है।

''करीब दो वर्ष बाद जब शहर में फिर तना–तनी का दौर शुरू हुआ तो घिरे हुए मुहल्ले पर पहला पत्थर दक्खिनी टोले की ओर से ही फेंका गया।''[8]

अमिताभ ने लघु कथाओं में कुछ शिल्पगत प्रयोग भी किये हैं। उदाहरण के लिए 'गुफा' शीर्षक लघु कथा देखी जा सकती है। इसमें 'विक्रम' और 'वेताल' के संवादों की शैली को एक नये रूप में प्रस्तुत किया गया है। कुल छः पंक्तियों की इस लघु कथा में 'वेताल' पूछता है कि यह किसकी गुफा है जिसमें जाने वाले के पद चिन्ह तो दिखाई देते हैं, लौटने वाले के नहीं राजा का उत्तर है 'यह गुफा' राजनीति की है।''9 इसी प्रकार 'बदलाव' शीर्षक लघु कथा में प्रतीकों का प्रयोग किया गया है, इसमें आये कौए और कोयल भारतीय राजनीति के सुपरचित चरित्र हैं। यहाँ 'कन्ट्रास्ट' की पद्धति कई लघु कथाओं में निहित व्यंग्य को तीक्ष्ण बनाती है। 'थप्पड़' शीर्षक रचना में विद्यार्थी और नेता आमने–सामने हैं और उनके माध्यम से सत्ता पर हावी लोगों का चरित्र उजागर हो गया है।''[10]

वेदप्रकाश अमिताभ ने अधिक लघु कथाएँ नहीं लिखी हैं लेकिन उनकी प्रत्येक लघु कथा इस विधा के निकष पर खरी उतरती हैं। आकार की लघुता, मार्मिक चुभन, सौदेश्यता, आकर्षक शिल्प आदि गुणों ने इन लघु कथाओं को मूल्यवान बना दिया है।

सन्दर्भ–

1. हिन्दी लघु कथा कोश, **पृ०सं०–8**
2. हिन्दी लघु कथा कोश, **पृ०सं०–361**
3. हिन्दी लघु कथा कोश, **पृ०सं०–362**

4. अंकुर, **पृ०सं०–35**
5. अंकुर, **पृ०सं०–36**
6. अंकुर, **पृ०सं०–34**
7. हरकारा नवम्बर 09 जनवरी **2010** तृतीय आवरण
8. प्रगतिशील आकल्प अप्रैल जून, **2008**, **पृ०सं०–13**
9. हिन्दी लघु कथा कोश, **पृ०सं०–361**
10. प्रगतिशील आकल्प अप्रैल जून, **2008, पृ०सं०–13**